

Vol - 07/ July 2016

ISSN 2321 5054

History Times

A Peer Reviewed Research Journal of History & Archaeology

Editors

Prof. Naveen Gideon

Prof. B. K. Shrivastava



Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)

Regd. No. 06/09/01/09369/12

CONTENTS

1. दण्डेरी ग्राम के मंदिर, अभिलेख एवं बावड़ियाँ डॉ. मीना श्रीवास्तव	1
2. बिहार का स्वाधीनता सेनानी तिलका मांझी डॉ. वन्दना गुप्ता	6
3. सरगुजा का पुरातात्विक स्थल-“डीपाडीह” डॉ. शशिकला सिन्हा	9
4. प्राचीन भारत में दण्ड व्यवस्था डॉ. सीमा पाण्डेय	14
5. स्वतंत्रयोत्तर काल में वनोत्पादों का राष्ट्रीयकरण एवम् छत्तीसगढ़ के तेन्दूपत्ता श्रमिकों पर उसका प्रभाव अभिषेक अग्रवाल	18
6. सूफी संत : मिर्जा मजहर जान-जाना डॉ. अलीमा शहनाज सिद्दीकी	25
7. ब्रिटिश अधीनता में 1818 से 1842 ई. के मध्य सागर जिले की भू राजस्व व्यवस्था डॉ. बी. के. श्रीवास्तव	28
8. अलेक्जेंडर कनिंघम : एक दृष्टि डॉ. रंजना जैन	32
9. भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में मध्य प्रान्त की नारी शक्ति डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ	34
10. बुन्देलखण्ड के बुन्देला राजा डॉ. गीता राजपूत	42
11. मध्यप्रदेश के अन्तर्राष्ट्रीय ख्यात चित्रकार-सैयद हैदर रज़ा (एक विनम्र श्रद्धांजली) डॉ. कुमकुम माथुर	45
12. नक्सलवाद : समस्या बनाम आंदोलन डॉ. सीमा झेरवार	49
13. पूर्वमध्यकालीन भारत में लघु राज्यों का अस्तित्व डॉ. अनिल दुबे	54
14. J.R. Tavernier : A Historical View Dr. Vibha Rathod	57
15. Roll of Youth In Nation Building : A Historical Survey Dr. Mukesh Kumar	61
16. भारत की विदेश नीति और विकास डॉ. भावना यादव	67
17. बैतूल का सामाजिक जीवन : ऐतिहासिक अध्ययन डॉ. जरीना जॉन चौधरी	71
19. चित्रकूट धाम मंडल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि डॉ. अरविन्द कुमार दीक्षित	76
20. वर्तमान में गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता डॉ. शिखा चौबे	78
21. 1853 की मूल पाण्डुलिपि के आधार पर आर्थिक मामलों संबंधी पत्रों के प्रारूप डॉ. नवीन गिडियन	80

Prof. Naveen Gideon

Editor, "History Times"

Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)

Cell - 9425020650, E-Mail : historytimes2010@gmail.com

ब्रिटिश अधीनता में 1818 से 1842 ई. के मध्य सागर जिले की भू राजस्व व्यवस्था

डॉ. बी. के. श्रीवास्तव

प्रोफेसर-इतिहास

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारत में अंग्रेज शासन के विरुद्ध प्रथम समर 1857 ई. में प्रारंभ हुआ। सागर जिले में 1857 के स्वातंत्र्य समर की पूर्व पीठिका 1842 के बुन्देला विद्रोह के दौरान ही प्रारंभ हो गयी थी। 1842 के बुन्देला विद्रोह को न केवल सागर अपितु समस्त भारत में 1857 के स्वातंत्र्य समर की पृष्ठभूमि के रूप में देखा जा सकता है। सन् 1818 ई. में पेशवा द्वारा सागर एवं दमोह जिले अंग्रेजों को सौंप दिये गये। 1818 ई. से 1842 ई. तक अंग्रेजों द्वारा इस क्षेत्र के लागू की गई भू राजस्व व्यवस्था एवं जन विरोधी नीतियों का प्रतिफल 1842 ई. के बुन्देला विद्रोह के रूप में सागर जिले में सामने आया।

पेशवा द्वारा अंग्रेजों को सागर जिला सौंपे जाने के पश्चात् 6 मार्च 1818 ई. को बुन्देलखण्ड के अंग्रेज गवर्नर जनरल के एजेंट ने जनरल मार्शल को सागर भेजा। 11 मार्च 1818 ई. को विनायक राव ने सागर का किला अंग्रेजों को सौंप दिया। 10 मार्च 1818 ई. को अंग्रेजों ने सागर क्षेत्र की जनता के नाम घोषणा जारी की। इस घोषणा में कहा गया कि अब सागर के सभी निवासी, न्याय और स्वतंत्रता के उन्हीं सुस्थापित सिद्धांतों के अनुसार शासित होंगे जो अंग्रेजी शासन के अपनी प्रजा के प्रति व्यवहार को विनियमित करते हैं। सागर जिले में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिये विभिन्न अंग्रेज अधिकारी अपनी-अपनी बटालियन के साथ विभिन्न दिशाओं में निम्नानुसार बढ़े -

13 मार्च को मेजर लैम्ब ने पश्चिम की ओर कूच किया और रेहली, एरण, खुरई व खिमलासा के किलों पर अधिकार किया।

13 मार्च को ही मेजर रोज पूर्व की ओर बढ़ा और सानौधा के किले पर अधिकार किया।

15 मार्च को जनरल मार्शल स्वयं उत्तर की ओर बढ़ा और 23 मार्च को एक संघर्ष के पश्चात् धामोनी पर अधिकार कर लिया।

इस प्रकार सुनियोजित तरीके से अंग्रेजों ने सागर के आसपास के क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित किया। अभी तक के इतिहास में हमने पाया कि किसी भी वंश ने इतनी योजनाबद्ध तरीके से सागर क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित नहीं किया था। अब सागर जिले में राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र धामोनी के स्थान पर सागर में आ गया। इसी समय सागर जिले में राजनीतिक गतिविधियों का दूसरा प्रमुख केन्द्र शाहगढ़ था। शाहगढ़ में महाराजा छत्रसाल के वंशजों का अधिकार था।

पेशवा एवं नागपुर के भौंसले से जो क्षेत्र अंग्रेजों को प्राप्त हुआ उस सबको मिला कर 1820 ई. में सागर-नर्मदा प्रदेश नाम से एक नये प्रदेश का अंग्रेजों ने गठन किया। यह सागर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद एवं जबलपुर का सागर नर्मदा प्रदेश भौगोलिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण था। यह भूमिखण्ड प्राकृतिक उर्वरता और विपुल उत्पादन क्षमता से युक्त था। यह क्षेत्र अंग्रेजों को भी अत्यन्त पसंद आया और उन्होंने इस क्षेत्र पर अपना वर्चस्व बढ़ाने का पूरी दृढ़ता से प्रयास किया। अपनी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण 'सागर' भी अंग्रेजों को अत्यंत